भारत के गांव

हमें यह बताते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि हम नवम्बर २००० से मार्च २००१ तक भारत में रहे और करीब १२० गांवों में गये। इस यात्रा के दौरान हमें सबसे अधिक आभास इस बात का मिला कि जानकारी का आदान-प्रदान मुक्त रूप से न होना सबसे बड़ी समस्या है। नियमों की जानकारी जिसके पास है और जिसके लिए है उन लोगों के आपसी सम्पर्क इस दिशा में नहीं के बराबर हैं।

गरीब आदमी इसलिए भी गरीब रहता है कि सरकारी तंत्र से उसे दूध (काम) निकालना आता नहीं है। हजारों लोगों से बातचीत के बाद यही निष्कर्ष निकला कि गांव के लोग बुद्धू नहीं हैं बल्कि उनके पास चालू ज्ञान की कमी है। जब भी हमने उन्हें सूचना देने के लिए कुछ बताया, वे सीखने को, जानने को उत्सुक व हमारे सुझावों पर काम करने के लिए उतारू लगे। हम लोगों का सौभाग्य था कि हम अपने उन सरल, सभ्य, सहृदय गांवों में बसने वाले देशवासियों के साथ उनके घरों में रहे एवं अपरिचित होते हुए भी प्यार से उन्होंने अपना सर्वस्व आतिथ्य के रूप में जो कुछ हमें दिया वह हमने सिर आंखों पर धारण करके स्वीकार किया। हां, हमारी एक-दो मांगें थीं कि हम खाना गर्म खाएंगे, मच्छरदानी में सोएंगे, पानी उबला हुआ ही पिएंगे, जिससे स्वस्थ रह सकें।

हमने अपनी शादी की ३०वीं सालगिरह करीब २५ लाख लोगों के साथ हलाहाबाद में कुम्भ के मेले में मनाई। वहां और बहुत-सी स्मरणीय बातों के साथ दो विशेष चीजें देखीं और महसूस किया कि ये हमारे देश के गांवों के लिए बहुत उपयोगी होंगी। एक है हल संयंत्र जो बैलों में लग जाता है इस पर बैठकर महिलाएं तथा बच्चे भी आसानी से हल जोत सकते हैं। ट्रैक्टर से अधिक उपयोगी व सहज है। दूसरा बैलों से चलने वाला बिजली बनाने का यंत्र। इससे इतनी बिजली बनाई जा सकती है कि एक बैल द्वारा ४० वाट के २० बल्ब जलाए जा सकते हैं। हमारे मन में यह बात घर कर गई कि जहां भी हम जाएंगे गांवों में इन आविष्कारों के बारे में अवश्य बताएंगे। हल संयंत्र की कीमत करीब १८००० रू० थी और बिजली संयंत्र की कीमत ५०,००० रू.। इससे बैलों की उपयोगिता को वैज्ञानिक उपकरणों से जोड़कर अपने गोधन का समुचित विकास सम्भव हैं। कृषक परिवार का जीवन सरल, स्वतंत्र व सम्पन्न बनाने में इन वैज्ञानिक आविष्कारों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। इसी तरह जब भी हम अखबार पढ़ पाते थे तो उसमें हम उपयोगी खबरें कैंची से काट कर अपने पास रख लेते थे और हमारे पास एक और बात करने कहने की हो जाती थी। हो सकता है कि कुछ बातों को और लोग नहीं जानते हों लेकिन जब हम उनका ध्यान उस ओर दिलाते थे तो गांव के लोग बहुत ध्यान से सुनते थे।

हम लोगों को सिक्किम में एक युवा कैम्प में भाग लेने का अवसर मिला। वहां १०२९ युवा जो भारत के २२ प्रान्तों से आये हुए थे, उनके साथ विचार-विनिमय हुआ। उनका शक्ति व उत्साह देखकर बहुत ही हर्ष हुआ। इसके संचालक श्री सुब्बाराव जी हैं जो पिछले ५० सालों से भारत में समाज सेवा कर रहे हैं। विवाह नहीं किया है। ७८ साल के हो गये हैं पर युवकों जैसा उत्साह

व बच्चों का सरल-निर्मल मन है। कर्नाटक, बंगलौर के रहने वाले हैं। गांधी जी, विनोबा भावे व श्री जयप्रकाश नारायण के साथ कार्य कर चुके हैं और चम्बल घाटी में डाकुओं का आत्मसमर्पण भी करवाया था। पर इन्होंने सरकार में कभी कोई पद ग्रहण नहीं किया। अब भी भारत की आशा युवा शक्ति को ही यथाशक्ति प्रोत्साहित करते रहते हैं। इलाहाबाद में कुम्भ के मेले में भी इन्होंने युवा कैम्प आयोजित किया था। इलाहाबाद कुम्भ में जाने का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ हमें कि अब पूरे भारत में जगह-जगह जाकर विद्वान, महन्तों व पण्डितों के दर्शन करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्योंकि वे सब कुम्भ मेले में मौजूद थे। पर मेरे भारत के उत्थान के लिए जो प्रयत्नशील हैं उनसे मिलने के लिए मेरा मन सदा लालायित रहता है।

गांवों की तरक्की के लिए कुछ गैर सरकारी संस्थाएं बहुत अच्छा कार्य कर रहीं हैं। फलस्वरूप गांवों की स्थिति में बहुत सुधार भी हुआ है। इन्हीं संस्थाओं के काम को हम देखने गांवों में गये थे क्योंकि पिछले १५ सालों से इनसे जुड़े हुए थे और अब अनुकूल समय होने पर देखना चाहते थे कि हमारी मदद की उन्हें अभी भी क्यों इतनी आवश्यकता है। जो हमें अनुभव हुए वह लिखना चाहते हैं। ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इससे अवगत हो सकें।

हमने गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, झारखण्ड, दिल्ली, बंगाल, उड़ीसा, सिक्किम प्रान्तों के गांव देखे। हमने हर जगह इस बात को महसूस ही नहीं किया वरन् जोर दिया कि आय का साधन कृषि के अलावा हर ग्रामीण परिवार के लिए एक और विकल्प होना चाहिए। गांव के लोग ज्यादातर महाजनों के चंगुल से छूट गये हैं पर अब आवश्यकता है कि लोग नई-नई कम्पनी जो चिट फन्ड चलाती हैं और नाम कुबेर रखती हैं उनसे भी बचे रहें जो इन महाजनों का स्थान लेना चाहती हैं। अतः उधार सिर्फ आर्थिक उत्थान के लिए लें यानि अपनी जीविका में वृद्धि करने हेतु, आराम व सुख सुविधा के साधन खरीदने के लिए नहीं।

हमने गुजरात को भूकम्प से पहले व बाद में देखा। पहले पानी की कमी कृषि के लिए मुख्य समस्या थी, बाद में तो विनाश और अब नव निर्माण और लगा कि जरूरत इतनी ज्यादा है क्योंकि भारत में तो ६३५,००० गांव हैं और हमने को केवल १२० ही देखे हैं। यह पता नहीं हमारा सौभाग्य था कि दुर्भाग्य, हमने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व बिहार के टुकड़े होते हुए देखा जो तीन से छः प्रदेश हो गये उत्तरांचल, झारखण्ड व छत्तीसगढ़। हम यह उम्मीद करते हुए इस लेख को लिख रहे हैं कि आप लोग जब भी मौका मिले एक न एक गांव में जाकर गांववालों की समस्याओं को सुनें और उनके साथ बैठकर अपने ज्ञान व उनकी आवश्यकताओं में कुछ तालमेल मिलाकर उनके हल तक पहुंचने में ग्रामवासियों की मदद व हौसला आफजाई करें तो उनका तथा मेरे भारत का भी लाभ होगा तथा दोनों का भविष्य उज्जवल होने के साथ-साथ आपको भी बहुत खुशी मिलेगी। हमारी जो धारणा बनी है वह निम्न हैं :

१. भारत एक गरीब देश है वरन् वितरण प्रणाली पुरानी एवं दूषित है जिसे अंग्रेजी शासन ने भारत का शोषण करने को बनाया था न कि प्रजा के हित के लिए।
२. सूचनाओं का आदान-प्रदान कमी युक्त है।
३. सरकारी तन्त्र बहुत बड़ा व जटिल हो गया है और इतनी जड़ता से भरा हुआ है कि सरकार

के हर प्रयत्न के बावजूद तरक्की इसी वजह से रूकी हुई है कि योजनाएं जिनके लाभ के लिए बनती हैं उन तक पहुंच ही नहीं पाती हैं।

४. ज्यादातर भारतीय जनता ईमानदार है (७२ करोड़) पर २९ करोड़ बेईमान संगठित हैं और ऐसा लगता है कि सभी बेईमान हैं - अखबार भी, दूरदर्शन भी, व्यवसाय भी पर ऐसा नहीं है वरन संगठन के आगे हार मान लेते हैं।

५. जो अच्छे काम सरलता से किये जा सकते हैं और हो रहे हैं विभिन्न गांवों में, उनका प्रसारण व उन्हें दोहराने की प्रक्रिया बहुत धीमी है।

६. गैर सरकारी तन्त्र भी सरकार की संरचना, कार्य विधि व वितरण प्रणाली से गांवों को उनके लाभ हेतु अवगत नहीं कराते हैं। आवश्यकता पारदर्शिता की है।

७. हमें याद रखना है कि हम गांवों को दिल्ली, बम्बई या कलकत्ता बनाने नहीं जा रहे हैं वरन उनको स्वावलम्बी बनाना ही ध्येय है।

८. गांववालों के तरीकों को हमें सीखना होगा ताकि सुधार उन्हीं के तरीकों से लाया जा सके।

९. सफाई की कमी हर गांव में है, हर शहर में है। अतः पूरे देश में गन्दगी अपने आप होगी।

कुछ बातें जो हमने अखबारों में पढ़ी गांवों के लिए उपयोगी थीं पर गांव के लोगों को नहीं मालूम थीं हो सकता है आपको न भी ज्ञात हों। यदि सम्भव हो तो निम्न सूचनाएं वितरित करें:

१. ६५ साल से ऊपर, अन्धों व विधवाओं को सरकार की ओर से २०० रू. प्रतिमाह का प्रतिदान निर्धारित है। इनको १० किलो चावल या गेहूं का आटा प्रतिमाह देने का भी प्रावधान सरकार द्वारा निर्धारित किया गया है।

२. न्यूनतम आय से नीचे के लोगों को सरकार घर बनाने के लिए २३,००० रू. तक की मदद कर रही है। (इन्दिरा आवास योजना)

३. जो महिलाएं संगठित होकर आर्थिक स्वतंत्रता के लिए आरम्भ में अपने संगठन के लिए सरकार से मदद ले सकती हैं।

४. महिलायें स्वयं हल संयंत्र द्वारा आसानी से खेती कर सकती हैं। सम्पर्क के लिए : भारतीय गोवंश संवर्धन प्रतिष्ठान, एफ-१२०, लाडो सराय, नई दिल्ली-११००३०। कीमत : १७,५०० रू. (सरकारी अनुदान ८००० रू. सहित ९५०० रू. बैठेगी)। कहीं-कहीं जहां राज्य सरकारें लागू करेंगी।

५. बैलों से चलने वाले बिजली के जैनरेटर गांवों में इस्तेमाल के लिए उपलब्ध हैं। सम्पर्क करें: सुरभि संस्थान बनारस (उ०प्र०)।

६. हर लोकसभा सदस्य को प्रतिवर्ष करोड़ों रूपये अपने क्षेत्र के गांवों के उत्थान के लिए मिलते हैं। लेकिन सही जरूरतमंद लोगों को इसकी जानकारी न होने से यह राशि मिलीभगत में ज्यादा और सुधार कार्यो में कम खर्च होती है। लेकिन अगर आम आदमी को इसका ज्ञान होगा तो निवेदन पत्रों द्वारा मांग प्रेषित करके सुधार लाया जा सकता है।

यहां बैठे हम क्या कर सकते हैं कुछ विचार हम आपस में बांटेंगे एक मत होने से संगठन बढ़ता है और एकता में बल है।

१. हमें उन गांवों में जहां हमारी पहुंच हो यह बताना चाहिए कि सरकार की संरचना व कार्य प्रणाली क्या है और कैसे हमारे लिए एक सहारा बन सकती है। चार्ट बनाकर दिखाएं तो उन्हें समझने में आसानी होगी। सरकारी कर्मचारियों का भय मिटाएं, पुलिस का भय मिटाएं उन्हें अधिकारियों से मित्रतावत पत्र व्यवहार के लिए उत्साहित करें। यह विश्वास दिलाएं कि सरकारी अधिकारी उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए जनता के द्वारा चुने गये हैं तथा जनता की पहुंच के भीतर हैं। गांववालों को उनके स्वयं के कर्तव्य व नागरिक जिम्मेदारी से भी अवगत कराएं। उनका आत्मविश्वास जगाएं जिससे वे शिकायतों को तब तक धैर्यपूर्वक सरकारी कर्मचारी या सम्बद्ध अधिकारी व उच्चाधिकारी को प्रेषित करते रहें जब तक वे हल न हो जाएं। लिखित में करें और प्रमाण रखें।

२. समस्याएं आशावादी होने पर ही हो पाएंगी निराशावादी खेमें से उन्हें बचाएं। गल्तियों को उभारें बल्कि उनसे भविष्य में कैसे बचा जाए यह सोचें और कैसे नये तरीके से सोचा जाए ताकि सुधार सामूहिक रूप से लाया जा सके।

३. उनकी समस्याओं को ध्यान से सुनें, समय लगाएं। हो सकता है मिलकर बातचीत करने से ऐसा हल निकले जो आसानी से कार्यान्वित किया जा सकता हो। आवश्यकता है लगन, समय, कार्यप्रणाली, ज्ञान व नियमों की।

४. बजट के क्या फायदे हैं तथा हिसाब-किताब रखने से धन का सदुपयोग हो सकता है यह समझाएं। सुनियोजित ढंग से धन का संचय न होने की निराशा से भी धन का अपव्यय होता है।

५. सामूहिक प्रार्थना का बल व महत्व अपने लिए, अपने पड़ौसी के लिए व अपने देश के लिए बहुत है। सबकी तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करें।

६. गैर सरकारी स्वयंसेवक संस्थाएं जिन गांवों में न हों वहां बनाएं तथा जो आपके इलाके में कार्यरत हों उनकी सहायता लें व उनसे विचार-विमर्श करें।

७. गांव के स्कूलों में पढ़ाई के अलावा बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान के लिए आसपास की जगहों में बाहर ले जाना चाहिए ताकि उन्हें वह ज्ञान भी हो सके जो कक्षा में बैठकर हासिल नहीं किया जा सकता और वे अपने परिवेश व पर्यावरण की छोटी-छोटी समस्याओं को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

८. गांव के बच्चों को शहर व शहर के स्कूली छात्रों को गांवों के स्कूल जरूर दिखलाए जाएं ताकि असमान स्थिति का हर एक को भान हो।

९. स्कूलों में दंड के बजाय प्रोत्साहन को बढ़ावा दिया जाये तो विद्यार्थियों की उन्नति अवश्य होगी।

१०. गांव व शहर के बीच की दूरी मिटाने के लिए उनके अवयवों को एक-दूसरे से सम्पर्क तो अवश्य बढ़ाना होगा जो अभी नहीं के बराबर हैं। गांव से लोग शहर तो चले जाते हैं पर शहर से वापिस मुड़कर गांव की ओर नहीं जाते हैं। सिर्फ शहर की चीजें ही गांव में ले जाते हैं। इससे गांवों में हीनभावना का पदार्पण हुआ है।

सफाई व स्वास्थ्य में सुधार के लिए हमने निम्न सुझाव अपनी यात्रा के दौरान गांववालों को दिये एवं कुछ संस्थाओं के नाम व पते सबके लाभ हेतु :

१. कम से कम साबुन, टूथपेस्टों आदि का इस्तेमाल करें। इनकी जगह नीम, नमक, दूध, बेसन, सन्तरे के छिलके का चूरा आदि ज्यादा कारगर हैं जिनसे जल का प्रदूषण कम होता है और अपव्यय को रोककर बचत का उपयोग आवश्यक मदों में किया जा सकता है।

२. अंग्रेजी दवाईयों का इस्तेमाल सिर्फ आवश्यकता पड़ने पर, बिना डॉक्टर की सलाह के न किया जाए। योग का ज्ञान व अभ्यास शरीर को निरोग व स्वस्थ्य रखने के लिए जरूरी है। हम देख रहे हैं, विदेशों में इसका चलन बढ़ रहा है। जबकि हमारे गांवों में दवाईयों का दुरूपयोग बढ़ रहा है जो कि बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। कुछ गांवों में बच्चों को योग सिखाते देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई।

३. सिद्ध योग के ज्ञान का सहारा बीमारियों के इलाज के लिए लिया जा सकता है। सम्पर्क के लिए :- १. सिद्ध साइंस, ५०/७, मुन्डवा नगर, बदगांवेशरी रोड, पुणे ४२११०१४ फोन नं० ०२०-६६८१९००।

४. क्रिया योग संस्थान, झूंसी, इलाहाबाद उ०प्र० ०५३-२६६७२४३ स्वामी सत्यम से सम्पर्क करें अपने गांव में बुलाने के लिए, सबके स्वास्थ्य लाभ हेतु।

५. इन्टरनेशनल एसोसिएशन फार साइंटिफिक स्प्रिचुएलिटी मेरठ, उ०प्र० में ०१२१-५२५७८७ पर श्री अखलेख जी से सम्पर्क करें अपने गांवों में यह विज्ञान ले जाने के लिए।

६. उपरोक्त तीनों संस्थाएं विज्ञान सहित रहन-सहन, व्यवहार व खान-पान, ध्यान द्वारा बिना दवाईयों के बीमारियों से राहत दिलाती हैं। इनके संसर्ग में आकर लोग बीमारी के साथ-साथ गरीबी-दरिद्रता से भी निजात पाएंगे व आध्यात्मिकता धार्मिकता का स्थान ले लेगी। इन बातों की गांवों में बहुत आवश्यकता है। कुछ गांवों में लोग गैर सरकारी स्वयंसेवक संस्थाओं के प्रयत्नों के फलस्वरूप नैसर्गिक औषधि, सौन्दर्य तथा सफाई प्रसाधनों का उपयोग करते हैं और बच्चों को योग भी सिखाया जा रहा है जो कि बहुत उत्साहवर्धक शुरूआत है। लेकिन इस दिशा में बहुत अधिक काम करने की आवश्यकता है। हम अब इन विषयों पर पुस्तकें ले जाकर गांवों में दें तो यह गांवों को आत्मनिर्भर व सुदृढ़ बनाने की दिशा में बहुत अच्छी योजना होगी।

७. गोबर गैस संयंत्र का निर्माण व देखरेख की जानकारी देना गांवों में बहुत लाभकारी रहेगा।

८. जहां भी पानी का नल या हैण्ड पम्प हो वहां पास में एक और गड्ढा गहरा खोदकर उसे पत्थरों से भरा जाए ताकि बिखरा हुआ पानी छनकर फिर से वापिस जमीन में चला जाए। इससे आसपास कीचड़, गन्दगी व पानी का अपव्यय भी कम होगा।

९. सूर्य ऊर्जा का लाभ लें। निम्न उद्योगों से गांवों में संयंत्र लगाने में मदद मिलेगी :-
इंडियन रिन्यूएवल एनर्जी, नई दिल्ली-११०००३, सम्पर्क : अभिलाख सिंह फोन ०११-४६८२११३ सरकार अनुदान देती है ५० प्रतिशत फिर कीमत का ४५ प्रतिशत लोन देती है सिर्फ १० प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर पर। मान लीजिए ५ लाख का संयंत्र है तो गांव वालों को सिर्फ २५००० रू० की ही आवश्यकता होगी।

१०. भारत के इंजीनियर श्री कृष्णमूर्ति, जो मिशिगन (यू०एस०ए०) की यूनिवर्सिटी में पढ़ाते हैं, ने एक सूर्य ऊर्जा चलित साईकिल का निर्माण किया है। यह खोज भारत जैसे देश के गांवों तथा शहरों में रिक्शा चालकों के लिए बहुत उपयोगी हो सकती है। धूप का सदुपयोग तथा उससे राहत भी, क्योंकि रिक्शा के छत्र पर लगे सूर्य ऊर्जा सेल की पावर से रिक्शा या साईकिल चलेगी। जानकारी के लिए मुझे सम्पर्क कर सकते हैं २४८-४७१-५७८६ Email ruenterprise@aol.com, R. Narayan (022) 4074350 Mumbai.

११. हमने गांवों में पीने के पानी को साफ करने वाला सिरेमिक का बना एक यंत्र भी दिखाया जो सिर्फ ४५ रू० में दिल्ली से खरीदा था। इसके द्वारा पानी द्वारा फैलने वाली बहुत-सी बीमारियों की रोकथाम हो सकती है। यह यंत्र हर शहर में मिलता है। बहुत सरलता से इन्हें मिट्टी के घड़ों तक में लगाया जा सकता है। लोग इन्हें आसानी से खरीद सकते हैं वरना बहुत गरीब गांवों में प्रशिक्षण सहित बांटे जा सकते हैं।

१२. स्कूलों में समाज सेवा पर बल देना होगा और अपने आसपास के वातावरण के बारे में जानकारी देनी होगी क्योंकि अब हमें अंग्रेजी शासक की तरह दिल्ली, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता के लिए सस्ते लिपिक नहीं वरन् गांवों के उत्थान के लिए होनहार नागरिकों का निर्माण करना है ताकि वे अपनी समस्याओं के प्रति जागरूक रहकर उन्हें सुलझा सकें।

१३. खान-पान में स्वस्थ-सुधार हेतु व ईंधन की बचत के लिए परिवर्तन लाना होगा। कम से कम एक बार का खाना दिन में बिना पका जैसे अंकुरित दालें, चना, अनाज, फल, सलाद, सब्जी, टमाटर, प्याज, नमक आदि में स्वादिष्ट बनाकर खाएं तो ईंधन (वृक्षों) की बचत के साथ-साथ स्वास्थ्य भी समस्त पौष्टिक तत्वों को पाकर सुधरेगा। हरी सब्जी गांवों में बहुत मात्रा में मिलती है परन्तु कई गांवों में लोग जानकारी की कमी से इनका सेवन नहीं के बराबर करते हैं। अतः उन्हें पर्याप्त विटामिन नहीं मिल पाते हैं। सब्जी के नाम पर आलू का सेवन बहुत किया जाता है।

१४. मल्टीनेशनल्स व शहरी आबादी को गांवों के पानी की चोरी से रोका जाए। बोतल का पानी जो शहर के लोग पीते हैं तथा कोकाकोला आदि की बोतलों को साफ करने के लिए कोकाकोला, पेप्सीकोला कम्पनियां गांवों में प्लांट लगाकर शक्तिशाली पम्पों से गहरे पानी को गांवों से चुरा रहे हैं। इससे कृषि की फसलों पर बुरा असर पड़ता है। लोगों को अवगत करा कर इस चोरी को रोकें। यह लूट है, खुली छूट है, इसके खिलाफ लड़ें। सम्पर्क के लिए : रामधीरजजी, नयी आजादी उद्घोष, गांधी भवन, चैथम लाइन, इलाहाबाद, उ०प्र०-२११००२, (०५३२) ६४१८७२।

१५. पढ़ाई के दूसरे अधिक प्रभावशाली तरीके क्या हो सकते हैं जानने के लिए सम्पर्क करें : सिद्ध सोसाइटी फोर इंटेग्रेटेड डवलपमेन्ट ऑफ हिमालय, पूरनपुर लण्डौट, मंसूरी (उत्तरांचल) २४८१७९, फोन : (०१३५) ६३१३०४। यहां पर स्कूल के बच्चों को उनके आसपास के पेड़-पौधों की जानकारी तथा उनके गांव में कौन से त्यौहार, मेले कब और क्यों मनाये जाते हैं। कैसे शुरू हुए। उनके आसपास का भूगोल कैसा है। उसकी रक्षा कैसे की जाए।

पेड़ों को कैसे बचाया जाए वरना क्या नुकसान होगा आदि व्यवहारिक बातों का प्रशिक्षण दिया जाता है। शिक्षान्तर, उदयपुर, राजस्थान की एक संस्था भी इसी तरह का काम कर रही है। हमें इस शिक्षा को हर गांव में उपलब्ध कराना चाहिए।

१६. गांवों में तरह-तरह की जड़ी बूटियां पाई जाती है जिनसे काफी तरह की बीमारियों से राहत मिलती है। ये दवाईयों से बहुत सस्ती तथा अधिक लाभकारी होती है। ऐसे सभी पौधों के बारे में ग्राम सभा द्वारा लिखित जानकारी रखी जाए। इस दिशा में राजस्थान की एक स्वयंसेवक संस्था कार्यशील है। 'जागरण जन विकास समिति' बेदला, उदयपुर में है। फोन : (०२९४) ४४१३२२, ४४१५२७ चेतना, संगठन विकास उनका नारा है। ये रोगों के उपचार शिविर लगाते हैं हर माह। इन संस्थाओं के काम को स्वयं देखें, उनसे मिलें। इससे अधिक जानकारी के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते हैं। या खुद 'वानी' VANI वौलन्टियर एक्शन नेटवर्क इंडिया को लिख सकते हैं। बी-५२, शिवालिक, नई दिल्ली-११००१७, फोन : (०११) २६६८८३६९, २६६८१६८९ फैक्स (०११) ६६८०६७४। ई-मेल vani@vsnl.com (Umbrella of NGO thought sharing bank)

१७. एक संस्था गांव के किशोर व युवाओं को औद्योगिक प्रशिक्षण मुफ्त देती है। सम्पर्क के लिए : श्री जी०एस० त्रिपाठी, शूभकर इंस्टीट्यूट ऑफ एप्रोप्रिएट टेक्नोलोजी, चिनहट मल्हौर, लखनऊ (उ०प्र०) फोन : (०५२२) २१३५०६ तथा ग्रामीण विषयों पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचारशील एक संस्था सरल सेन्टर फौर साइंस कल्वर मूलपुर इटावा में डॉ० राम चौधरी ने शुरू की हैं इसी तरह अन्य स्थानों पर भी ग्रामीणों के लाभ हेतु अच्छी संस्थाएं खोली जानी चाहिए।

हम निम्न संस्थाओं के आभारी हैं जिनके कार्यकर्ताओं ने अदम्य, उत्साह, लगन के साथ हमें अपना कार्य क्षेत्र दिखाया (गांव) जिससे हमारे को इतना अच्छा अनुभव हुआ। हम इतना कुछ सीखने को मिला। उन संस्थाओं के नाम व पते नीचे हैं। सम्पर्क के लिए वह उत्सुक है :-

१. तरूण भारत संघ : श्री राजेन्द्र सिंह जी, भीकमपुरा-किशोरी थाना गाजी, अलवर, राजस्थान, भारत।
   फोन : (०१४६५) २५०४३ ३०१०२२

२. सार्बिक ग्राम विकास केन्द्र : श्री नारायन भाई पो० दासपुरा, मिदनापुर (प०ब०)-७२१२११
   फोन : (०३२२५) ५४२३७, ५४२१७

३. पीपुल साईंस इन्सटीट्यूट : श्री रवि चोपड़ा, २५२ बसन्त विहार, देहरादूर (उत्तरांचल)
   फोन : (०१३५) ७६३६४९, ७७३३८४९

४. आनन्दी : श्रीमती जान्हवी अन्धरिया, गोवरधन निवास, अरानी मानेकबाड़ी, भावनगर गु०-३६४००१
   फोन : (०२७८) ५११५७८ (द) ५११२८३ (त)

५. मानव कल्याण ट्रस्ट : श्री लल्लू भाई देसाई, भक्तिनगर, पुलिस लाइन के पीछे, खेड़बहमा, सावरकन्ठा। फोन : (०२७७५) २००८५

६. मार्ग - श्रीमती नीता पान्डया, चामुन्डा, रोड, चोटीला, सुरेन्द्र नगर, गु० ३६३५२०
फोन : (०२७५१) ५०२९४

७. जागरण जन विकास समिति-श्री गणेश पुरोहित, सपेतिया रोड, बेदला, उदयपुर, राजस्थान-३१०००१
फोन : (०२९५१) - २२५५

८. अंकुर संस्थान - श्री मंत्रीलाल/राम चन्द/हुकुम सिंह, मंडोल, उदयपुर, राजस्थान।
फोन : (०२९५१) - २२५५

९. नेशनल यूथ प्रोजेक्ट - श्री महेन्द्र जैन, एल ३/६१, आचार्य विहार, भुवनेश्वर, उड़ीसा।
फोन (०६७४) ५४२७४५, ७५१०१३

१०. सेवा भारती - श्री धर्म वीर कोहली, सेवा कुन्ज झन्डेवाली माता का मंदिर के पास, नई दिल्ली-११०००१
फोन : (०११) ७५३४६६२

११. अर्चना - श्री रा०म० सबरवाल, मधुवन करनाल हरियाणा, भारत
फोन : (०१८४) ३८०९८०

१२. विभिषण पुर घिरी स्टार क्लब-विभीषण पुर, मिदनापुर (प०बं०)
फोन : ७२१४५८

१३. ताम्रलिप्त निर्विदता जन कल्याण समिति-श्री नलरूल इस्लाम, राजनगर, बाहरजला, तमलुक, मिदनापुर-७२१६५१
फोन : (०३२२८) ६४५२३ (ए) ६४५२८ (ज)

१४. ठेंगा वाहिनी-श्री कृषक लक्ष्मण दास जी, कृषिक कुटीर, दुर्गापुर, वारवटी वाया धर्मशाला, जाजपुर उड़ीसा-७५३००८।

१५. सारविक ग्राम विकास उनयन संघ - श्री अहमद भाई, वोआलिया, मिदनापुर (प०बं०)

१६. लोक कल्याण संस्थान - श्री भंवरलाल चौधरी, बटायू, वाडमेड़, राजस्थान-३४४०३४
फोन : ०२९८२-४१५२१

१७. रूरल डेवलपमेंट एजूकेशन सोसायटी - श्री तागाराम चौधरी, लक्ष्मीनगर, वाड़मेड़, राजस्थान-३४४००१
फोन : ०२९८२-२२६१४

१८. उरमूल-सेतू, श्री दिलीप सिंह, लूनकटनासार, बीकानेर, राजस्थान।
फोन : ०१५२८-२२१०४

१९. जैसलमेर उरमूल ट्रस्ट-मरूस्थली बुनकर-श्री राम चौधरी जी, फालौदी रा०, पोखरन राजस्थान
फोन : ०२९२५-२२२७२

२०. जाईन्टस ग्रुप राजी-श्री सुनील गुप्ता, डांगर टोली, रांची, झारखण्ड-३१२३८३

२१. सेन्टर फार यूथ एण्ड सोसल डेवलपमेंट (CYSD) श्री जगदानन्द जी, ई-१, इन्सटीट्यूशनल एरिया, नागपल्ली, भुवनेश्वर उड़ीसा-७५१०१३
फोन : ०६७४-५७११५०

२२. अन्त्योदय चेतना मण्डल (ACM) - श्री आदित्य पटनायक, एन ३/१ आईआरसी विलिज, भुवलेश्वर उड़ीसा-७५१०१३
फोन : ०६७४-५५-२५८६

२३. होप (HOPE) श्री विभू जैना, वीआईएम-२२०, शैलाश्री विहार, भुवनेश्वर, उड़ीसा-७५१०२१
फोन : (०६७४) २४४२४१३ (त), (०६७४) २४४१५६८ (द)

२४. अभियान-श्री मधुसूदन दास, २२४, रासूल गढ़, भुवनेश्वर, उड़ीसा (ANO. IVC-6/3, UNIT ३ करवेल नगर)
फोन : (०६७४) ४१८८७७

रश्मि उमेश रोहतगी
२४१६१, नीलन ड्राइव, नोवी, मिशिगन
(सं.रा.अ.) ४८३७५ (२४८) ४७१-५७८६
E-mail : rurohatgi@yahoo.com www.rurohatgi.com